6. शुचिता निष्फला नहि (क्तवतु प्रत्ययः)

हिंदी अर्थ–

रमा – उमा! तुम क्या सोच रही हो?

उमा – मुझे यह किताब खेल के मैदान से मिली थी। इस किताब पर किसी का भी नाम नहीं लिखा है। जिसकी यह किताब है वह इसके विषय में चिन्तित होगा क्योंकि यह बहुत कीमती पुस्तक है।

रमा – तुम क्यों चिन्तित हो? तुम इस किताब को स्वयं पढ़ो अथवा पुस्तकालय में दे दो।

उमा – नहीं, मैं यह किताब प्रधानाचार्य को दूँगी जिससे वे प्रार्थना सभा में सब छात्रों से पूछकर उसे दे देंगे जिसकी यह किताब है क्योंकि ईमानदारी कभी भी नहीं छोड़नी चाहिए। इसके अंदर दी गई इस कहानी से मैंने यही सीखा।

सुन्दरनगर में एक दानी सेठ रहता था। वह बिना कीमत के अन्न क्षेत्र चलाता था। यहाँ से लोग अपनी आवश्यकता के अनुसार वस्तुएँ प्राप्त करते थे। उनमें एक छह-सात वर्ष की बालिका भी थी किन्तु ग्रहण करने वालों की भीड़ के कारण वह हमेशा कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाती थी। सेठ ने उसे देखा। उन्होंने उसकी इस असमर्थता को देखकर सबको बाँटने के बाद एक विशेष मोटा लड्डू उसे दिया।

घर जाकर बालिका ने वह लड्डू माता को दे दिया। लड्डू तोड़ने पर उन्हें उसमें एक सोने की अँगूठी मिली। उसको बेचने से उनकी सारी गरीबी दूर हो सकती थी। किन्तु कभी भूल से यह इसमें आई हो ऐसा सोचकर माता ने शीघ्र ही उसे लौटाने के लिए पुत्री को सेठ के पास भेजा।

इससे खुश हुए सेठ पुत्री के साथ उसके घर गए। वहाँ उसकी माता की ईमानदारी से प्रभावित होकर उन्होंने उस बालिका की शिक्षा से लेकर विवाह तक का सारा खर्च स्वयं ग्रहण कर लिया। और उसकी माता के भरण-पोषण की उचित व्यवस्था करके अपनी विशाल हृदयता ही प्रमाणित की।

अभ्यासः

संकलनात्मकं मूल्यांकनम्

1. **पठत लिखत च–** (पढ़िए और लिखिए–)
   यहाँ 'दा' धातु के लृट् लकार के रूप दिए गए हैं छात्र उन्हें याद करके लिखें।
2. **उचितम् उत्तरं चिनुत–** (उचित विकल्प चुनिए–)
   (क) (*ii*) पुस्तकम् ☑ (ख) (*i*) शुचिता ☑
   (ग) (*iii*) दानवीरः ☑ (घ) (*ii*) लङ्लकारः ☑
   (ङ) (*i*) तृतीया ☑
3. **एकपदेन उत्तरत–** (एक पद में उत्तर दीजिए–)
   (क) सुन्दरनगरे (ख) षट्-सप्तवर्षीया (ग) स्थूलं मोदकम्
   (घ) श्रेष्ठिनः पार्श्वे (ङ) अंगुलीयकम्
4. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–** (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए–)
   (क) श्रेष्ठी निःशुल्कम् अन्नक्षेत्रं चालयति स्म।
   (ख) बालिका ग्रहीतृणां सम्मर्दवशात् किमपि न प्राप्नोति स्म।
   (ग) श्रेष्ठी तस्याः किमपि ग्रहीतुम् अशक्ततां दृष्ट्वा बालिकायै स्थूलं मोदकं दत्तवान्।
   (घ) मोदकत्रोटनेन बालिकायाः माता एकं स्वर्ण-अंगुलीयकं प्राप्नोत्।
   (ङ) सा अचिन्तयत् यत् कदाचित् प्रमादेन तद् अस्मिन् आयातं स्यात्।
   (च) मातुः शुचितया प्रभावितः भूत्वा श्रेष्ठी तस्याः बालिकायाः शिक्षातः आरभ्य विवाह-पर्यन्तं सर्वं भारं स्वयं गृहीतवान् बालिकायाः मातुः अपि समुचितां भरण-पोषण-व्यवस्थाम् अकरोत्
5. **रञ्जितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–** (रंगीन पदों के आधार पर प्रश्न बनाइए–)
   (क) सुन्दरनगरे कः वसति स्मः?
   (ख) जनाः कस्मात् आवश्यकतानुसारं वस्तूनि विन्दन्ति स्म।
   (ग) का सम्मर्दवशात् किमपि न प्राप्नोति स्म।
   (घ) कः ताम् एकं स्थूलं मोदकं दत्तवान्।
   (ङ) बालिका मोदकं कस्यै अयच्छत्।
6. **मञ्जूषातः चित्वा विपरीतार्थकपदानि लिखत–** (मञ्जूषा से चुनकर विलोम शब्द लिखिए–)

दानी	– कृपणः	दरिद्रः	– धनिकः
आवश्यकम्	– अनावश्यकम्	दुर्बलः	– बलवान्
स्थूलम्	– कृशः	उचितम्	– अनुचितम्

7. **विशेषण-विशेष्यपदानि योजयत–**

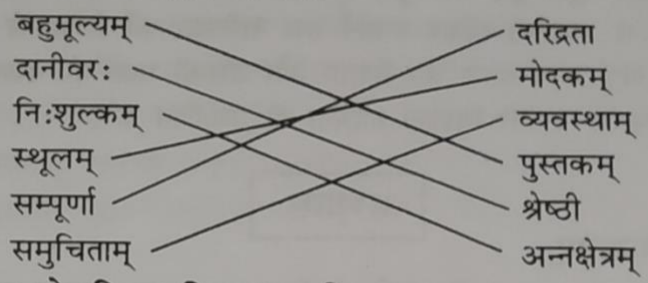

8. **प्रत्ययान् योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–**

(क) तस्याः अशक्ततां **दृष्ट्वा** सः दुःखितः अभवत्।

(ख) किञ्चित् **विचिन्त्य** बालिका तत्र अगच्छत्।

(ग) तस्याः व्यवस्थां **कृत्वा** श्रेष्ठी अगच्छत्।

(घ) श्रेष्ठी बालिकायाः सर्वं भारं **गृहीतवान्**।

(ङ) श्रेष्ठी तस्यै मोदकं **दत्तवान्**।

9. **अधोलिखित पदानां लिंग-विभक्ति-वचनानि लिखत–** (निम्नलिखित पदों के लिंग, विभक्ति और वचन लिखिए–)

पदम्	**लिंगम्**	**विभक्तिः**	**वचनम्**
सुन्दरनगरे	नपुंसकलिंगम्	सप्तमी	एकवचनम्
प्रधानाचार्याय	पुल्लिंगम्	चतुर्थी	एकवचनम्
तस्याः	स्त्रीलिंगम्	षष्ठी	एकवचनम्
सर्वेभ्यः	पुल्लिंगम्	चतुर्थी/पञ्चमी	बहुवचनम्
मातुः	स्त्रीलिंगम्	षष्ठी	एकवचनम्
बालिकायाः	स्त्रीलिंगम्	षष्ठी	एकवचनम्

10. **अधोलिखितवाक्यानि लृट्लकारे परिवर्तयत–** (निम्नलिखित वाक्यों को लृट्लकार (भविष्यत्काल) में बदलिए–)

(क) बालिका विद्यालयं गमिष्यति।

(ख) त्वं कुत्र गमिष्यसि?

(ग) बालकाः उद्याने धाविष्यन्ति।

(घ) अहं चित्रं द्रक्ष्यामि।

(ङ) यूयम् अधुना किं करिष्यथ?